

जन्म दिवस संस्कार

सामग्री - कुंकुम, मोली, गुड़, चावल, चंवलों की फली, जल कलश आदि से युक्त थाल । नारियल, बड़ा कलश (नारियल रखने हेतु), स्वस्तिक बनाने हेतु चावल, बाजोट, लाल वस्त्र, मंगल भावना यंत्र आदि ।

* प्रारंभिक भाग

- जिनका जन्म दिवस है, उन्हें उच्चासन पर बैठायें ।
- **नमस्कार महामंत्र** से कार्यक्रम का मंगल प्रारंभ करें ।
- निम्न मंत्रोच्चार करते हुए थाली के मध्य कुंकुम से **अर्हम्** लिखें व बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर चावल से **स्वस्तिक** बनायें -

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि-शोषणाय ॥

सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ॥

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी ।
मंगलं स्थूलभद्राद्याः, जैन धर्मोऽस्तु मंगलम् ॥

(अर्हम् व स्वस्तिक निर्माण के पश्चात् भी उपरोक्त मंत्रोच्चार हो सकते हैं ।)

- निम्न मंत्रोच्चार के साथ मस्तक पर **तिलक** करें व कलाई पर **मोली** बांधें तथा बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर चावल से **स्वस्तिक** बनायें -

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नमः

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं गौतमस्वामिप्रमुख सर्व साधुभ्यो नमो नमः

धम्मो मंगल मुक्किटं, अहिंसा संजमो तवो ।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मो सया मणो ।

धर्मस्य शरणं ग्राह्यं, सर्वदा सुखदं वरम् ।
धर्मस्त्राता पिता माता, भ्राता समृद्धिदायकः ॥

• दीवार पर अथवा अन्य किसी उपयुक्त स्थान पर संभव हो तो **जन्म दिवस मंगलमय हो** - लिखें ।

• जिनका जन्म दिवस है वो बड़ों को **चरण-स्पर्श** से प्रणाम करते हुए आशीर्वाद लें व सभी को **जय जिनेन्द्र** से अभिवादन करें ।

* मंगल भावना यंत्र की स्थापना

सामूहिक मंगल भावना करवाते हुए जिनका जन्म दिन है उनके हाथों बाजोट अथवा अन्य उपयुक्त स्थान पर **मंगलभावना यंत्र** की स्थापना करवायें-

श्री सम्पन्नोऽहं स्याम् ह्री सम्पन्नोऽहं स्याम् धी सम्पन्नोऽहं स्याम्
धृति सम्पन्नोऽहं स्याम् शक्ति सम्पन्नोऽहं स्याम् शान्ति सम्पन्नोऽहं स्याम्
नंदि सम्पन्नोऽहं स्याम् तेजः सम्पन्नोऽहं स्याम् शुक्ल सम्पन्नोऽहं स्याम्

* मंगल मंत्रोच्चार व कार्यक्रम

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः, सिद्धाश्च सिद्धि-स्थिताः।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः॥
श्री सिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा, रत्न-त्रयाराधकाः।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलम्॥

नाणेणं दंसणेणं च, चरित्तेण तहेव य ।
खंतीए मुत्तीए, वड्डमाणो भवाहि य ॥

नमिऊण असुरसुर-गरुल-
भुयंगपरिवंदिए गयकिलेसे ।
अरिहे सिद्धायरिए उवज्झाए सब्बसाहूय ॥

नो रोगा नैव शोका, न कलहकलना, नारिमारिप्रचारा,
नैवाधिर्नासमाधिर्न च दर-दुरिते दुष्टदारिद्रता नो ।
नो शाकिन्यो ग्रहा नो, न हरिकरि-गणा व्यालवेतालजालाः,
जायन्ते पार्श्वचिन्तामणिनतिवशतः प्राणिनां भक्तिभाजाम्।

● लोगस्स का पाठ करें -

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
 अरिहंते कित्तइस्सं, चउव्वीसंपि केवली॥
 उसभमजियं च वंदे, संभवमभिन्दणं च सुमइं च।
 पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥
 सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च।
 विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥
 कुंथं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
 वंदामि रिद्धिनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥
 एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीण-जरमरणा।
 चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥
 कित्तिय-वंदिय-मए, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
 आरोग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥
 चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
 सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥

● जन्म दिवस मंगलमय हो - सभी समवेत स्वर में एकाधिकवार.. (तीन बार) बोलकर शुभ कामना प्रकट करें ।

- आपस में मिठाई आदि से मुंह मीठा कराया जा सकता है ।
- निम्न संकल्प स्वीकार करायें -
- (१) हम अच्छे संस्कारों का जीवन जियेंगे ।
- (२) देव, गुरु और धर्म के प्रति अपनी श्रद्धा पुष्ट रखेंगे ।
- (३) अण्डा, मांस, मछली व शराब का सेवन नहीं करेंगे ।
- (४) विनम्रता व सहनशीलता के गुणों का विकास करेंगे ।
- (५) प्रतिदिन नमस्कार महामंत्र का स्मरण करेंगे ।

✽ समापन

- आशीर्वाद व शुभ भविष्य की मंगल कामना के संक्षिप्त वक्तव्य हो सकते हैं ।
- उपहार आदि के आदान-प्रदान का क्रम रह सकता है ।
- निम्न मंत्र से आशीर्वाद व शुभकामना प्रदान करें -

तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। वृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। अविघ्नमस्तु।
आयुष्यमस्तु। आरोग्यमस्तु। कर्मसिद्धिरस्तु। इष्टसम्पत्तिरस्तु। पापानि शाम्यन्तु
पुण्यं वर्धताम्। श्रीः वर्धताम्। कुलगोत्रे चाभिवर्धताम्। स्वस्ति भद्रं चास्तु।

- मंगलपाठ के साथ सम्पन्न करें।

• • •

विशेष - चारित्रात्मायें विराजित हों तो उनके दर्शन करके मंगलपाठ श्रवण करें तथा प्रतिदिन स्वाध्याय, जप आदि करने जैसा कोई प्रेरक संकल्प स्वीकार करें।

नोट - (१) विधि संचालन के दौरान आवश्यकतानुसार परिशिष्ट में उल्लिखित मंत्रों का उपयोग किया जा सकता है। (२) विधि संचालन-क्रम को सुविधानुसार आगे-पीछे किया जा सकता है।



मंगल संकल्प

- मुझे शांत जीवन जीना है।
- मुझे पवित्र जीवन जीना है।
- मुझे ऊँचा जीवन जीना है।
- मुझे सादा जीवन जीना है।
- मुझे सरस जीवन जीना है।
- मुझे सरल जीवन जीना है।
- मुझे त्यागमय जीवन जीना है।
- मुझे प्रेममय जीवन जीना है।

मैं निर्विकार हूँ। मैं ज्योतिर्मय हूँ। मैं आनन्दमय हूँ।